ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, July-December 2025, Submitted in November 2025

प्रेमचंद युग से 1980 तक के हिंदी सामाजिक उपन्यासों में परिवार के परिवेश का अध्ययन

रीतु दत्ता, शोधार्थी (हिंदी), टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर
पूजा धमेजा, सहायक आचार्य (हिंदी), टांटिया विश्वविद्यालय श्रीगंगानगर

सार

हिंदी सामाजिक उपन्यासों में परिवार का चित्रण समाज की संरचना, मूल्य–व्यवस्था और परिवर्तनशील जीवन–दृष्टि को समझने का एक सशक्त माध्यम रहा है। प्रेमचंद युग से लेकर 1980 तक के कालखंड में हिंदी उपन्यासों ने संयुक्त परिवार, टूटते पारिवारिक संबंधों, स्त्री–पुरुष संबंधों, पीढ़ीगत संघर्ष तथा नैतिक मूल्यों के क्षरण को यथार्थवादी दृष्टि से प्रस्तुत किया है। इस शोध–पत्र का उद्देश्य उक्त कालखंड के प्रमुख सामाजिक उपन्यासों में परिवार के परिवेश, उसकी समस्याओं और बदलते स्वरूप का विश्लेषण करना है।

प्रस्तावना

परिवार समाज की मूल इकाई है और साहित्य उसका प्रतिबिंब। हिंदी उपन्यास, विशेषतः सामाजिक उपन्यास, पारिवारिक जीवन की जटिलताओं, संबंधों और संघर्षों को अत्यंत सजीव रूप में प्रस्तुत करते हैं। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में ग्रामीण एवं नगरीय परिवारों की यथार्थ समस्याओं को उजागर किया। उनके पश्चात् जैनेन्द्र, यशपाल, अज्ञेय, फणीश्वरनाथ 'रेणु', भीष्म साहनी तथा धर्मवीर भारती जैसे उपन्यासकारों ने बदलते सामाजिक–आर्थिक परिदृश्य में परिवार की बदलती भूमिका को रेखांकित किया। 1940 से 1980 तक का कालखंड सामाजिक संक्रमण का दौर रहा, जिसमें संयुक्त परिवार व्यवस्था का विघटन और एकल परिवार की अवधारणा उभर कर सामने आई।

साहित्य समीक्षा

प्रेमचंद के गोदान, गबन और निर्मला में पारिवारिक शोषण, आर्थिक दबाव और स्त्री की स्थिति का यथार्थ चित्रण मिलता है। जैनेन्द्र के उपन्यासों में पारिवारिक संबंधों की मनोवैज्ञानिक जटिलता दिखाई देती है। यशपाल ने पारिवारिक जीवन को सामाजिक–राजनीतिक संदर्भों से जोड़ा।

भीष्म साहनी के तमस तथा बसंती में परिवार सामाजिक उथल–पुथल का शिकार बनता दिखाई देता है। वहीं धर्मवीर भारती के उपन्यासों में आधुनिक परिवारों की भावनात्मक रिक्तता उभरकर सामने आती है।

पूर्ववर्ती शोधों में सामाजिक यथार्थ और वर्ग संघर्ष पर अधिक ध्यान दिया गया है, किंतु परिवार के परिवेश को एक स्वतंत्र अध्ययन विषय के रूप में अपेक्षाकृत कम देखा गया है।

अनुसंधान पद्धति

यह शोध गुणात्मक (Qualitative) पद्धति पर आधारित है। अध्ययन के लिए चयनित उपन्यासों का पाठ–विश्लेषण किया गया है। तुलनात्मक और विवेचनात्मक दृष्टि अपनाकर पारिवारिक संरचना, संबंधों और परिवर्तनों का अध्ययन किया गया है। प्राथमिक स्रोत के रूप में उपन्यास तथा द्वितीयक स्रोत के रूप में आलोचनात्मक ग्रंथों और शोध–पत्रों का उपयोग किया गया है।

अनुसंधान अंतराल

अब तक किए गए अधिकांश अध्ययनों में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक पक्षों पर अधिक जोर दिया गया है। प्रेमचंद युग से 1980 तक के हिंदी सामाजिक उपन्यासों में परिवार के परिवेश को कालानुक्रमिक और समग्र दृष्टि से देखने वाले शोध अपेक्षाकृत कम हैं। यह अध्ययन इसी अंतराल को भरने का प्रयास करता है।

अध्ययन का महत्व

यह शोध हिंदी सामाजिक उपन्यासों में परिवार की भूमिका को समझने में सहायक होगा। इससे भारतीय समाज में पारिवारिक मूल्यों के परिवर्तन, स्त्री की स्थिति तथा पीढ़ीगत संघर्षों की बेहतर समझ विकसित होगी। साहित्य और समाज के अंतर्संबंधों को जानने के लिए यह अध्ययन उपयोगी सिद्ध होगा।

निष्कर्ष

प्रेमचंद युग से 1980 तक के हिंदी सामाजिक उपन्यासों में परिवार केवल कथा का पृष्ठभूमि तत्व नहीं बल्कि सामाजिक परिवर्तन का केंद्र बिंदु रहा है। इस कालखंड में संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर बढ़ता समाज स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। उपन्यासकारों ने पारिवारिक परिवेश के माध्यम से सामाजिक यथार्थ, नैतिक मूल्यों और मानवीय संवेदनाओं को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है।

संदर्भ सूची

- प्रेमचंद – गोदान
- प्रेमचंद – निर्मला
- जैनेन्द्र – त्यागपत्र
- यशपाल – दिव्या
- भीष्म साहनी – तमस
- धर्मवीर भारती – गुनाहों का देवता
- रामविलास शर्मा – हिंदी उपन्यास और यथार्थ
- नामवर सिंह – कहानी नई कहानी

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY